By Dr. Krishna singh

प्रयोगवाद

प्रत्येक युग की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ होती है । इसी के अनुरूप काव्य के विषय एवं कलापक्ष का निर्धारण एवं मूल्यांकन होता है । इस दृष्टि से प्रत्येक नई रचना को एक ' नया प्रयोग ' कहा जाने लगा । प्रत्येक कवि नई बात नई ढंग से कहता है या कहना चाहता है । अतः प्रत्येक रचना एक नवीन प्रयोग ही होती है और प्रत्येक कवि प्रयोगशील होता है । परंतु कुछ वर्षों से हिंदी में एक विशेष प्रकार की कविता को ही अथवा एक विशेष प्रकार की बात को एक विशेष ढंग से कहने वाली कविता को ही ' प्रयोगवादी ' कहा जाने लगा । प्रयोगवाद का आरंभ 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित ' तारसप्तक ' से माना जाता है । इसकी भूमिका में लिखा गया है कि ये कवि नवीन राहों के अन्वेषी है - अभी राही ही है । उसमें यद्यपि ' प्रयोगवाद ' का नाम नहीं था , तथापि ' नवीन प्रयोग ' की कविता के क्षेत्र में क्रांतिकारी नवीनता की पूर्व-पीठिका अवश्य थी । अतः प्रयोगवादी कविता का आरंभ ' तारसप्तक ' के साथ ही माना जाता है । प्रयोगवादी कविता के ऊपर अंग्रेजी के कवि टी. एस. इलियट और लारेंस का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है । छंद एवं शब्दों के क्षेत्र में नए प्रयोग , रस एवं साधारणीकरण की अस्वीकृति , शहरी जीवन के घिनोने दृश्य आदि उसी की देन है । प्रयोगवाद एक प्रकार से प्रगतिवाद की विरोधी विचारधारा है । प्रगतिवाद का दृष्टिकोण जनवादी था । प्रयोगवादी की दृष्टि में कला और जीवन का वस्तुतः कोई संबंध नहीं है । वह कला को केवल कला के लिए , अपने अहं की अभिव्यक्ति के लिए ही मानता है । अहं का सामाजीकरण प्रगतिवाद का महत्वपूर्ण लक्षण था । साहित्य , कला और समाज के क्षेत्रों में प्रयोगवाद का दृष्टिकोण प्रायः प्रगति विरोधी , संकीर्ण एवं प्रतिक्रियावादी है । प्रयोगवादी कवियों का कहना है कि आजकल की नवीन युगचेतना , नवीन आदर्शों एवं नवीन संस्कृतियों का निर्माण कर रही है । इस चेतना का अंकन प्राचीन भाषा एवं शैली द्वारा नहीं किया जा सकता , क्योंकि हमारी भाषा का अब तक का रूप प्राचीनता के शिथिल और अशक्त होने के कारण नवीन विचारों , अनुभूतियों एवं अभिव्यक्तियों को सफलता के साथ व्यक्त करने में असमर्थ है । इसलिए हमें चलती हुई भाषा और आलंकारिक परंपराओं का मोह छोड़कर नवीन रूपों का सृजन करना पड़ेगा । इसके लिए प्रयोगवादी कवि नवीन शब्दों , नवीन भाषा , नवीन प्रतीकों और नवीन उपमानों का सहारा लेते है । प्रयोगवाद में कविता में शिल्प और संवेदना के स्तर पर सर्वथा नवीन प्रयोग मिलते हैं ।